بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 18.07.25

विजयी युद्ध मक्का के हवाले से आँहज़रत ﷺ के जीवन परिचय का ईमान वर्धक वर्णन तथा जलसा सालाना बर्तानिया के सफल आयोजन के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः 18 ,जौलाई 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया– आज भी मक्का पर विजय की घटनाओं के संदर्भ में आगे का विवरण बयान करूंगा। आप ﷺ के मक्का में निवास के विषय में मतभेद है। बुख़ारी में उल्लिखित रिवायत के अनुसार आप स. मक्के में 19 दिन ठहरे, आप स. दो रक्अत नमाज़ पढ़ते, अर्थात क़सर करते थे, कुछ रिवायतों में 17, 18 अथवा 15 दिनों का भी वर्णन है।

कुछ यूरोपी विद्वानों ने भी मक्का पर वि जय के सम्बन्ध में अपनी पुस्तकों में उल्लेख किए हैं, उदाहरणतः विल्यम मयूर जो एक प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वान् है, उसका सम्बन्ध स्काट लैंड से था। वह मक्का पर विजय की चर्चा करते हुए अपनी किताब लाइफ़ आफ़ मुहम्मद (ﷺ) में लिखता है कि मुहम्मद (ﷺ) का अतीत के समस्त पुराने दोषों को क्षमा कर देना तथा उनकी समस्त छोटी बड़ी ग़लतियों को भुला देना, वास्तव में आप (ﷺ) के अपने हित के लिए था परन्तु इसके लिए एक विशाल एवं अपार हृदय की आवश्यकता थी।

इसी प्रकार विल्यम मिन्टगुमरी, जो एक स्काटिश पश्चमी विद्वान् था और उसने इस्लाम एवं नबी

अकरम ﷺ के विरुद्ध अति निंदा जनक शब्द कहे, वह कहता है कि मक्के के रईसों को मुसलमान होने पर लिए विवश नहीं किया गया, ये रईस एवं अन्य अनेक लोग कुफ़्र पर क़ायम रहे। सबसे बढ़ कर वह निपुणता जिसके साथ उन्होंने (अर्थात, आँहुज़ूर ﷺ ने) अपने नेतृत्व में मौजूद एकजुट होने को संभाला तथा लगभग सभी लोगों को यह आभास कराया कि उनके साथ न्याय किया जा रहा है, इस चीज़ ने इस्लामी समाज में सदभावना, संतोष एवं जोश की भावना को विशिष्टता के साथ प्रकट कर दिया।

फिर एक पश्चमी विद्वान् है आर्थर गिलमेन, उसका सम्बन्ध अमरीका से था, वह कहता है कि आप (ﷺ) की यह बात अत्यंत प्रशंसनीय है कि जिस अवसर पर अतीत में मक्के के निवासियों के अत्याचारों की याद आप को बदला लेने पर उकसा सकती थी, आप स. ने अपनी सेना को हर प्रकार के रक्तपात से रोक दिया तथा विनम्रता एवं ख़ुदा तआला के प्रति आभार की हर सम्भव अभिव्यक्ति की। फिर लिखता है कि दस या बारह लोग जिन्होंने पहले विभिन्न अवसरों पर अत्यंत क्रूरता दिखलाई थी उनको दण्डित किये जाने का आदेश हुआ तथा उनमें से चार लोगों की हत्या करने का दंड दिया गया, किन्तु इस व्यवहार को अन्य विजय पाने वालों के व्यवहार के मुक़ाबले पर अत्यधिक मा नवता से परिपूर्ण कहना चाहिए। लिखता है कि सलीबियों के अत्याचारों की तुलना में, जिन्होंने 1099 ई. में सत्तर हज़ार मुसलमान पुरुषों एवं महिलाओं तथा असहाय बच्चों को उस समय मौत के घाट उतार दिया, जब योरोशलम उनके अधिकार में आया। अंग्रेज़ सेना की कठोरता की तुलना में कि वे भी सलीब की छांव में ही लड़े थे जिन्होंने 1874 ई. के यादगार वर्ष में युद्ध के समय अफ़्रीक़ा में गोल्ड कोस्ट (घाना) पर मौजूद एक राजधानी को जला डाला था। मुहम्मद ﷺ की विजय वास्तव में धर्म की विजय थी, न कि राजनीति की। आप स. ने हर प्रकार की व्यक्तिगत सम्मान की बातों को रद्द कर दिया तथा राजपाठ में अधिकारिता के समस्त मा र्गों से बचाया और जब मक्का के समस्त अहंकारी सरदार आप स. के सामने लाए गए तो आप स. ने उनसे पूछा कि तुम मेरे हाथों से किस चीज़ की आशा रखते हो? उन्होंने कहा- ऐ हमारे उदार भाई! दया की। आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया- तो फिर ऐसा ही हो, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

एक महिला विद्वान, रुथ क्रिन्सटीन का संबध भी अमरीका से था, वह लिखती है कि वर्ष 630 ई. के आरम्भ में एक दिन वह व्यक्ति जिसे केवल दस वर्ष पहले नगर से पत्थर मार मार कर निकाल दिया गया था और जिसे हास परिहास का निशाना बनाया गया था, अब अपने दस हज़ार अनुभवी सैनिकों के साथ नगर में दाख़िल हुआ। मुहम्मद (ﷺ) ने निर्देश दिया था कि किसी की हत्या न की जाए, नगर वासियों के साथ सदभावना वाला व्यवहार किया जाए।

केरिन आर्मस्ट्रांग बर्तानिया की एक अच्छी विद्वान् हैं, सामान्यतः बड़े न्याय के साथ लिखने वाली हैं। वे अपनी किताब में लिखती हैं कि आप (ﷺ) को रक्त रंजित बदला लेने की कोई इच्छा नहीं थी, किसी को इसलाम क़ुबूल करने के लिए विवश नहीं किया गया और न ही ऐसा लगता है कि किसी पर कोइ दबाव डाला गया। मुहम्मद (ﷺ) मक्का इस लिए नहीं आए थे कि क़ुरैश को कष्ट दें अथवा अत्याचार का निशाना बनाएं, बल्कि इस लिए आए थे कि उस धर्म को मिटा दें जो उनके लिए असफल हुआ था। मक्का पर विजय के द्वारा मुहम्मद (ﷺ) ने नबुव्वत के अपने दावे को सच्चा साबित कर दिया। यह विजय बिना किसी प्रकार के रक्तपात के प्राप्त हुई थी और मुहम्मद (ﷺ) की शान्ति पूर्ण पालिसी सफल रही। कुछ ही वर्षों में मक्के में बुत पूजने की प्रथा समाप्त हो गई और इक्रिमा एवं सुहैल जैसे अति दुष्ट विरोधी, निष्ठावान

एवं उत्साह पूर्ण मुसलमान बन गए।

मक्का पर विजय के विस्तृत वर्णन में अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के इस्लाम क़ुबूल करने की घटना भी मिलती है। यह व्यक्ति पहले मुसलमान था, वहयी को लिखने वाला भी था, परन्तु उसे ठोकर लगी और वह मुर्तद होकर मक्के आ गया। मक्के पर विजय के अवसर पर जिन लोगों का वध करने का आदेश दिया गया था उनमे अब्दुल्लाह बिन अबी सरह का नाम भी था, परन्तु हज़रत उसमान रज़ी. ने उसे शरण दी और वह आप रज़ी. के घर में कहीं छिपा रहा। एक दिन जब आप स. बैअत ले रहे थे तो हज़रत उस्मान रज़ी. उसे भी ले आए। आँहुज़ूर ﷺ कुछ क्षण तो रुके और फिर उसकी भी बैअत ले ली। यह बाद में मिस्र के गवर्नर भी रहे और अफ़्रीक़ा के एक इलाक़े को आधीन करने वाले भी थे। हज़रत उसमान रज़ी. के दूध शरीक भाई थे किन्तु आप रज़ी. की शहादत के बाद उस समय की उपद्रवों से पृथक हो गए थे। वर्णन मिलता है कि उन्होंने दुआ की थी कि उनका अन्तिम कर्म नमाज़ हो, अतएव एक दिन सुबह की नमाज़ में सलाम फेरते हुए इनकी वफ़ात हो गई।

इक्रिमा बिन अबी जहल को भी विश्वास था कि उसे अवश्य दंड मिलेगा। अतः उसने भी समुद्र के रास्ते से यमन जाने का निश्चय किया। उसकी पत्नी उम्मे हकीम ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, वह नबी करीम ﷺ की सेवा में उपस्थित हुई और निवेदन किया कि इक्रिमा को आशंका है कि आप स. उसका वध करवा देंगे, आप स. उसे शरण दे दें। आप स. ने फ़रमाया कि वह शरण में ही है। अतएव इक्रिमा की पत्नी उसके पास पहुँची और उसे कहा कि मैं तुम्हारे पास उस इंसान की ओर से आई हूँ जो लोगों में सबसे अधिक जोड़ने वाला, तथा लोगों में सबसे अधिक सज्जन, और लोगों में सबसे बढ़कर सहानुभूति करने वाला है। तू अपनी जान को कष्ट में मत डाल, क्यूंकि मैं तुम्हारे लिए शरण मांग चुकी हूँ। इस प्रकार इक्रिमा वापस आया और उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

जिन लोगों के वध का आदेश पारित हुआ था उनमें वह व्यक्ति भी था जिसके कारण आँहुज़ूर ﷺ की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ी. की मृत्यु हुई थी। उस व्यक्ति ने हज़रत ज़ैनब रज़ी. के ऊँट पर बैठने वाली गद्दी का एक छोड़ा पट्टा, जिससे उसे हांका जाता है, काट दिया था और आप रज़ी. ऊँट से नीचे जा गिरी थीं जिसके कारण इनका गर्भपात हो गया और कुछ समय पश्चात वे शहीद हो गईं। यह व्यक्ति भाग कर ईरान चला गया था परन्तु फिर आप स. की सेवा में उपस्थित हुआ और क्षमा याचना की, आँहुज़ूर ﷺने इस व्यक्ति को भी क्षमा फ़रमा दिया।

इसी प्रकार कअब बिन ज़ुहीर के इस्लाम क़ुबूल करने की घटना है। यह व्यक्ति भी आंहुज़ूर ﷺ का बड़ा विरोधी था, कवि था और अपनी कविता से इस्लाम एवं आँहुज़ूर ﷺ के विरुद्ध उपद्रव फैलाया करता था। यह नबी करीम ﷺ की सेवा में उपस्थित हुआ तथा अपनी पहचान प्रकट किए बिना कअब बिन ज़ुहीर के लिए क्षमा मांगने की याचना की। आप स. ने जब इसे माफ़ फ़रमाया तो उसने कहा कि कअब मैं ही हूँ। आँहुज़ूर ﷺ ने इसे माफ़ फ़रमा दिया। कअब ने आप स. की सेवा में एक शानदार प्रशंसात्मक चौपाई भी पेश की और आप स. ने इसे अपनी चादर प्रदान की, इसी कारण से यह बर्दा नामक चौपाई कहलाती है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इतिहास में इमाम बू-सेरी की प्रशंसात्मक कविता भी बर्दा कहलाती है। इसको भी बर्दा वाली चौपाई इस लिए कहा जाता है कि जब उन्होंने नबी करीम ﷺ की प्रशंसा में यह

कविता लिखी तो उन्हें सपने में नबी करीम ﷺ ने अपनी पवित्र चादर उढ़ाई जो उनके जागने के बाद भी उनके कन्धों पर मौजूद थी। कहा जाता है कि इमाम बू-सेरी अपाहिज थे और इस चादर के आशीर्वाद से स्वस्थ हो गए। अतएव यह एक कहानी है, जो बयान की जाती है, ऐसी कहानियां भी आ जाती हैं।

हुज़ूर ने फ़रमाया- कुछ अन्य घोर विरोधियों के इस्लाम क़ुबूल करने का भी वर्णन है, और किस तरह उनको माफ़ी मिली, वह वर्णन भी आगे बयान करूंगा।

अन्त में हुज़ूर पुरनूर ने फ़रमाया- अगले जुमः से इंशाल्लाह तआला अहमदिय्या जमाअत बर्तानिया का सालाना जलसा शुरू हो रहा है, उसके लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से इस जलसे को सफल बनाए और अपने फ़ज़लों से इस पर अपनी कृपा करता रहे। अल्लाह तआला हर एक विद्रोही एवं हानि पहुचाने वाले, और उपद्रव की धारणा रखने वाले के उपद्रव से बचाए। जो अतिथि देश के भीतर एवं बाहर से आ रहे हैं, अल्लाह तआला इन्हें कुशलता पूर्वक पहुंचाए और यहाँ भी कुशतला से रखे, आमीन। लोगों के जो निजि अतिथि जलसे के लिए आ रहे हैं अथवा जो जमाअत की व्यवस्था से आ रहे हैं, अतिथिगन विभाग के द्वारा उनकी व्यवस्था हो गी, अल्लाह तआला हर मेज़बान को इन मेहमानों की मेहमान नवाज़ी का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

कार्य-कर्ता बड़े चाव एवं जोश से ड्यूटियों के लिए स्वम को पेश करते हैं, अल्लाह तआला इन सब कारकुनों को भी सेवा करने का सामर्थ्य दे, अत्यंत मान सम्मान एवं प्रसन्नता एवं विनम्रता से ये महानों की सेवा करें।

कई बार काम की थकान एवं नींद की कमी के कारण कुछ कारकुनों का स्वभाव प्रभावित हो जाता है किन्तु हर कार्य-कर्ता को ये दिन इस सोच के साथ व्यतीत करने चाहिएँ कि हमें अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. के अतिथियों की सेवा का अवसर दिया है, इस लिए इसके लिए हम हर क़ुरबानी के लिए अपने आपको तय्यार रखेंगे और हर एक स्थिति में हमारे मुख पर मुस्कुराहट रहेगी।

कारकुन अफ़सर हो अथवा सहयोगी, युवतियां, युवक, पुरुष, स्त्रीयां, चाहे वे किसी भी विभाग से सम्बंधित हैं, सबको सदेव अपने मुख पर प्रसन्नता के साथ अपने दायित्व्यों का निर्वाह करना चाहिए, अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ दे, आमीन। किन्तु साथ ही हर एक पर गहरी नज़र भी रखनी चाहिए ताकि किसी को कभी कोई उपद्रव फैलाने का साहस न हो। अल्लाह तआला सब कारकुनों को सुन्दर रंग में सेवा का सामर्थ्य प्रदान करे और ये अल्लाह तआला की कृपाओं को ग्रहण करने वाले बनें, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब